

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Thursday, 24 September 2026

केन्द्रीय मंत्री सुरेश गोपी के विवादित बयान से राजनीति में तूफान, कहा – ‘जो शवों के सहारे चुने गए, वे केरल को धोखा दे रहे हैं’

Sanket Morankar

Published on 30 Sep 2025



नई दिल्ली। केरल की राजनीति में केंद्रीय मंत्री और अभिनेता सुरेश गोपी के विवादित बयान ने भारी हलचल मचा दी है। उन्होंने एक सार्वजनिक मंच पर कहा कि “जो नेता शवों के सहारे चुने गए हैं, वे केरल को धोखा दे रहे हैं।” इस बयान ने राजनीतिक दलों और आम जनता में विवाद की आग भड़काई है। विपक्षी पार्टियों ने सुरेश गोपी के इस बयान की कड़ी निंदा की है और इसे केरल की जनता के प्रति अपमानजनक बताया है।

सुरेश गोपी ने एक रैली में कहा कि केरल के कुछ नेता ऐसे हैं जिन्हें “शवों के सहारे” सत्ता में पहुंचाया गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि ये नेता राज्य के विकास और जनता के हितों की बजाय अपने स्वार्थ में लगे हुए हैं और केरल की जनता के साथ धोखा कर रहे हैं।

यह बयान ऐसे समय में आया है जब केरल में आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियाँ जोरों पर हैं और राजनीतिक पार्टियाँ सत्ता की कुर्सी पर काबिज होने के लिए पूरी ताकत लगा रही हैं।

सुरेश गोपी के बयान पर केरल की राजनीति ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

- मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन :** उन्होंने सुरेश गोपी के बयान को “असंवेदनशील और अपमानजनक” करार दिया और कहा कि इस तरह के बयान से राज्य की सामाजिक एकता को खतरा होता है। उन्होंने केंद्रीय मंत्री से अपने बयान को तुरंत वापस लेने की अपील की।
- कांग्रेस पार्टी:** कांग्रेस नेताओं ने भी इस बयान की निंदा की और कहा कि ऐसे बयान लोकतांत्रिक मूल्यों और सम्मान के खिलाफ हैं। कांग्रेस प्रवक्ता ने कहा कि राजनीति में सहिष्णुता और सम्मान बनाए रखना आवश्यक है।
- दक्षिण भारत की अन्य पार्टियाँ:** अन्य क्षेत्रीय दलों ने भी सुरेश गोपी के बयान को अनुचित बताते हुए कहा कि ऐसे विवादित बयान राजनीति में नफरत और द्वेष को बढ़ावा देते हैं।

सुरेश गोपी के बयान के बाद सोशल मीडिया पर बहस तेज हो गई है। एक ओर उनके समर्थक उन्हें सच बोलने वाला नेता बता रहे हैं, तो दूसरी ओर कई लोग इस बयान को राजनीति के स्तर को गिराने वाला और असंवेदनशील करार दे रहे हैं।

कुछ यूजर्स ने कहा कि यह बयान चुनावी राजनीति का हिस्सा है, जबकि कई ने इसे केरल की जनता और उनकी भावनाओं का अपमान बताया है।

केरल में 2025 के विधानसभा चुनाव से पहले इस बयान ने राजनीतिक माहौल को और गर्मा दिया है। भाजपा की केरल में बढ़ती राजनीतिक सक्रियता को देखते हुए यह बयान पार्टी के चुनाव अभियान का हिस्सा माना जा रहा है।

विश्लेषकों का कहना है कि यह बयान भाजपा को कुछ वोट बैंक तो दे सकता है, लेकिन यह पार्टी की छवि को भी नुकसान पहुंचा सकता है क्योंकि विवादित बयान अक्सर आम जनता के बीच नकारात्मक प्रभाव छोड़ते हैं।

अपने बयान के समर्थन में सुरेश गोपी ने कहा कि वे केवल केरल की राजनीति की सच्चाई बयां कर रहे हैं। उन्होंने कहा, “सच बोलना ही मेरा मकसद है, चाहे वह किसी को अच्छा लगे या नहीं। जो नेता जनता के भरोसे के हकदार नहीं हैं, उनके खिलाफ आवाज उठाना जरूरी है।”

उन्होंने यह भी कहा कि उनका उद्देश्य केवल केरल के लोगों के लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित करना है।

राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि सुरेश गोपी का बयान भाजपा की केरल में चुनावी रणनीति का हिस्सा हो सकता है, जिसमें विपक्ष को कमजोर करने की कोशिश की जा रही है। हालांकि, इस तरह के विवादित बयान राजनीतिक संवाद को प्रभावित करते हैं और सामाजिक सौहार्द में बाधा डाल सकते हैं।

विश्लेषकों ने सुझाव दिया है कि राजनीतिक दलों को संवेदनशीलता के साथ संवाद करना चाहिए और चुनावी मतभेदों को स्वस्थ तरीके से सुलझाना चाहिए।

केंद्रीय मंत्री सुरेश गोपी का विवादित बयान केरल की राजनीति में एक नया विवाद खड़ा कर गया है। इस बयान ने न केवल राजनीतिक दलों के बीच तनाव बढ़ाया है, बल्कि आम जनता के बीच भी गहरी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न की हैं। ऐसे विवाद समय-समय पर राजनीतिक चर्चा का हिस्सा बनते हैं, लेकिन इससे सामाजिक सद्भाव और लोकतांत्रिक मूल्यों को भी नुकसान हो सकता है।

राजनीतिक नेतृत्व से उम्मीद की जाती है कि वे विवादित बयानों से बचें और लोकतंत्र के आदर्शों के अनुरूप संवाद करें ताकि देश और प्रदेश की राजनीति स्वस्थ और समृद्ध हो सके।